# सेना की कार्यशैली और नजरियां

**देश की सेना आजकल जिन चुनौतियों से जूझ रही है वे सामान्य नहीं हैं। पड़ोस के दो देशों के साथ लगी सीमाओं पर हालात एक साथ तनावपूर्ण हो जाएं, ऐसा स्वतंत्र भारत के इतिहास में अब तक नहीं हुआ था।**

अमित वर्मा।।

भारतीय सेना को पांच थिएटर कमानों में पुनर्गठित करने की प्रक्रिया शुरू करने का जो फैसला किया गया है, उसके पीछे कुछ भूमिका मौजूदा परिस्थितियों के दबाव की भी है, लेकिन इससे सेना की कार्यशैली और नजरिये में दूरगामी प्रकृति के बदलाव देखने को मिलेंगे। देश की सेना आजकल जिन चुनौतियों से जूझ रही है वे सामान्य नहीं हैं। पड़ोस के दो देशों के साथ लगी सीमाओं पर हालात एक साथ तनावपूर्ण हो जाएं, ऐसा स्वतंत्र भारत के इतिहास में अब तक नहीं हुआ था। हालांकि युद्ध किसी भी सीमा पर नहीं शुरू हुआ है, लेकिन शक्तियों का संतुलन जिस तरह का है, उसमें अगर किसी भी मोर्चे पर टकराव एक हद से आगे बढ़ा तो दोनों सरहदों पर युद्ध शुरू हो जाने की आशंका बहुत बढ़ जाएगी। स्वाभाविक है कि ऐसे में देश की सेना हर उस तरीके पर विचार करेगी जिससे उसको अपनी क्षमता बढ़ाने में मदद मिल सकती हो। स्थल सेना, वायु सेना और नौसेना को थिएटर कमान व्यवस्था के तहत पुनर्संगठित किए जाने का फैसला इसी सोच की उपज है।

सैन्य हलकों में थिएटर कमान का मतलब होता है एकीकृत कमान। थिएटर कमान व्यवस्था लागू करने से आशय सीधे शब्दों में यह है कि एक इलाके में आर्मी, एयरफोर्स और नेवी, तीनों की यूनिटों को एक थिएटर कमांडर के अधीन लाया जाएगा। इन यूनिटों की ऑपरेशनल कमान जिस ऑफिसर के हाथ में होगी वह तीनों में से किसी भी सेना का हो सकता है। फिलहाल पूरी सेना के लिए पांच थिएटर कमान स्थापित करने की योजना है। नॉर्दर्न कमान, वेस्टर्न कमान, पेनिंसुलर कमान, एयर डिफेंस कमान और मरीन डिफेंस कमान। अभी तीनों सेनाएं स्वतंत्र ढंग से अपना काम करती हैं जिससे प्रयासों का दोहराव होता है। जैसे तीनों सेनाएं देश के वायु क्षेत्र की रक्षा का काम अपने–अपने स्तर पर करती हैं, लेकिन जो काम एक ने कर लिया, वही दूसरा भी न करे, यह सुनिश्चित करने का कोई उपाय नहीं है। नई व्यवस्था इस कमी को दूर करेगी।

अमेरिका और चीन समेत दुनिया के कई देशों की सेनाएं इसी व्यवस्था के तहत चल रही हैं। लेकिन किसी भी देश की सेना उसके इतिहास और जरूरतों की उपज होती है। संदर्भों से काटकर अन्य देशों की सेनाओं से तुलना हमेशा तर्कसंगत नहीं होती। यह भी याद रखना जरूरी है कि किसी भी आधुनिक व्यवस्था में सेना को 'फर्स्ट लाइन ऑफ डिफेंस' नहीं माना जाता।

देश अपनी कुशल कूटनीति के जरिए वैश्विक समाज में ऐसा स्थान बनाते हैं कि सुरक्षा के लिए सेना के इस्तेमाल की नौबत कभी विरले ही आ सके। इसका अर्थ यह नहीं है कि सेना खुद को चुस्त–दुरुस्त और हर चुनौती के लिए तैयार न रखे, या अपने ढांचे और कार्यशैली में समय के साथ सुधार न करे। थिएटर कमान इसी तरह का एक बड़ा सुधार है। उम्मीद करें कि इससे सेना की मारक क्षमता बढ़ेगी, लेकिन उसके उपयोग की जरूरत नहीं पड़ेगी।

## उत्तर रामायण

धर्म-दर्शन

**अशोक वोहरा।** गरुड़ और काकभुशुण्डि के बीच का जो अत्यंत सुंदर संवाद हुआ वही आगे चलकर उत्तर रामायण के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसका नामकरण किसी ने नहीं किन्तु किन्तु क्यूंकि ये कहीं ना कहीं श्रीराम से सम्बंधित था इसीलिए बाद में चलकर उसका ऐसा नाम प्रसिद्ध हुआ। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि लव–कुश द्वारा अश्व का हरण और श्रीराम से युद्ध, ऐसा कोई भी प्रसंग इस उत्तर रामायण अथवा मूल वाल्मीकि रामायण में नहीं है, हालाँकि तुलसीदास ने रामचरितमानस में इसे लिखा है। यहाँ ध्यान दें कि मैंने उत्तर रामायण कहा है, उत्तर कांड नही। उत्तर रामायण और उत्तर कांड में बहुत अंतर है। आधुनिक शोधकर्ता ये मानते हैं, और मेरा भी ये मानना है कि उत्तर कांड में जो वास्तविक मिलावट की गयी है वो आज से १५०–२०० वर्ष पूर्व अंग्रेजों के शासनकाल में की गयी है।

## संपादकीय

### आर्थिक वृद्धि

चीन में निर्यात आधारित आर्थिक वृद्धि का सूरज ढल रहा है, वैसे–वैसे अपना घरेलू बाजार बढ़ाना उसके लिए जरूरी होता जा रहा है। इसका सीधा तरीका अपने प्राकृतिक संसाधनों के अधिकतम दोहन का है, जो ज्यादातर पश्चिम के रेगिस्तानी, पठारी और अल्पसंख्यक बहुल आबादी वाले इलाकों में हैं। यहां खदानों, तेल कुओं, सोलर फार्मों और तेज रफ्तार गाड़ियों के जरिये लोगों को लुभाने के लिए वह जो कुछ कर सकता था, कर चुका है। इससे आगे का रास्ता अंध–राष्ट्रवाद का है। यानी यह कि उसका अश्वमेध का घोड़ा भारत ने पकड़ रखा है, उसे छुड़ाने के लिए सारे चीनी एकजुट हो जाएं। चीन का लगभग सारा कच्चा तेल तारिम बेसिन में निकाला जाता है, जो कश्मीर के उत्तर में पड़ने वाले पश्चिमी सीमाप्रांत शिनच्यांग में है। चीन की योजना सीपीईसी से आने वाली तेल–गैस पाइपलाइनों को यहीं के काशगर शहर में लाकर उसके पेट्रो इन्फ्रास्ट्रक्चर का फायदा उठाने की है। चिंगहाई में मौजूद नमक की झीलों में लीथियम और दुर्लभ मृदा तत्व पाए जाते हैं, जिसके लिए इस पर पूरी दुनिया की नजर रहती है। इस सबके बावजूद चीन की पुरबिया आबादी इधर आने से बचती है, क्योंकि यहां की तिब्बती, उइगुर, हुई और मंगोल जनता उसके प्रति सहज नहीं है। इस नीति के तहत ही आज दुनिया न्यिंग्ची, न्गारी, खोतान और गोलमुद जैसे शहरों के नाम जानने लगी है, जहां जल्द ही बड़ी तादाद में चीनी आबादी की आवक देखी जा सकती है। यह भारत के उत्तर में अचानक एक नया देश बस जाने जैसा होगा, जिससे उसे सिर्फ दो–चार दिन के लिए लड़ाई के मैदान में नहीं, बल्कि हर मौके पर हर रोज जूझना पड़ेगा।

मौसम में आधे घंटे का एक्सपोजर भी फेफड़े और दिमाग की जानलेवा दिक्कतों का सबब बन सकता है, उसमें इतने सारे स्वस्थ इंसानों का महीनों पड़े रहना कूटनीति की बड़ी विफलता समझा जाएगा।

# कूटनीति की बड़ी विफलता

चंद्रभूषण।।

नवंबर आते–आते लद्दाख के पूर्वी हिस्से में बर्फ पड़ने लगेगी और भारत–चीन वास्तविक नियंत्रण रेखा के इर्दगिर्द मोर्चा बांधे एक लाख फौजियों के लिए स्थितियां खतरनाक हो जाएंगी। जिस मौसम में आधे घंटे का एक्सपोजर भी फेफड़े और दिमाग की जानलेवा दिक्कतों का सबब बन सकता है, उसमें इतने सारे स्वस्थ इंसानों का महीनों पड़े रहना कूटनीति की बड़ी विफलता समझा जाएगा। लेकिन सैटलाइट तस्वीरों पर आधारित रिपोर्टों और 21वीं सदी के कुछ रुझानों पर गौर करें तो इस युद्ध–तत्पर जमावड़े के लिए सिर्फ जमीन के कुछ टुकड़ों पर दोनों पक्षों की परस्पर टकराती दावेदारियां जिम्मेदार नहीं हैं। मसलन, चीन की तरफ से पल्टनों और हर्बे–हथियारों का मूवमेंट सिर्फ तिब्बत तक सीमित नहीं है। क्षेत्रफल में इस देश का 38 फीसदी हिस्सा बनाने वाले तीन विशाल पश्चिमी प्रांतों शिनच्यांग, चिंघाई और तिब्बत, तीनों में बड़े टकराव की तैयारियां देखी जा रही हैं।

निश्चित रूप से इसके पीछे कुछ भूमिका धौंस–धमकी वाले रवैये की भी है। शायद चीनी शासक सोचते हों कि इतने बड़े पैमाने की तैयारियों से भारत दबाव में आ जाएगा और जल्दी सुलह–समझौते का रवैया अपना लेगा।

यहां यह चिह्नित करना जरूरी है कि चीन के लिए पूर्वी लद्दाख की जमीनें खुद में कोई बेशकीमती चीज नहीं। उसे डर इस बात का है कि भारत अपनी सामरिक स्थितियों का इस्तेमाल कहीं तिब्बत को शिनच्यांग से जोड़ने वाली सड़क को नाकारा बनाने और चीन–पाकिस्तान इकॉनमिक कॉरिडोर (सीपीईसी) में अड़ंगे लगाने में न करे। यह कॉरिडोर पाक अधिकृत कश्मीर से गुजर रहा है, जिसका एक हिस्सा पाकिस्तान ने बिना अपना अधिकार स्पष्ट किए ही चीन को सौंप दिया है, लिहाजा भारत का इस पर सवाल उठाना न्यायसम्मत है। चीन की कोशिश इस मुद्दे पर लंबे समय के लिए पोजिशनिंग करने की है, जिसके लिए उसने बहाना यह खोज रखा है कि सीमावर्ती क्षेत्रों में सड़कें और पुल बनाकर भारत ने यथास्थिति का उल्लंघन किया है।

दूरगामी रूप से देखें तो यह टकराव न सही, पश्चिम की ओर अपना दखल बढ़ाना चीन की एक लंबी योजना का हिस्सा है, जिसके एक पहलू– हिंद महासागर में सीधी निकासी को हम अच्छी तरह जानते हैं। अभी पूर्वी चीन सागर और दक्षिणी चीन सागर में जापान, ताइवान या सीधे अमेरिका से टकराव की स्थिति में कच्चे तेल जैसी रणनीतिक महत्व की चीजों की सप्लाई बंद हो जाने का डर उसे सारी दिक्कतों के बावजूद पाकिस्तान के बीच से एक व्यापारिक गलियारा खोलने के लिए मजबूर कर रहा है। उसकी योजना इस गलियारे के बहुविध इस्तेमाल की है, लेकिन ईरान से तेल और कतर से गैस की पाइपलाइनें अपने यहां लाना चीन का सबसे बड़ा मकसद है। अभी अमेरिका के लिए किसी टकराव की स्थिति में चीन को घुटनों पर लाना ज्यादा मुश्किल नहीं है। इसके लिए उसे सिंगापुर के पास मलक्का जलडमरूमध्य का रास्ता चीनी तेल टैंकरों के लिए कुछ समय तक बंद कर देना होगा। यह काम खाड़ी की पाइपलाइनें खुल जाने पर कठिन हो जाएगा।

### सूडोकु नवताल- 5520

✱✲✲✲✲ सरल

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | 8 | | | | 2 | 6 | | 3 |
| | | | 4 | | | | | |
| 1 | 3 | 5 | | 8 | | | | |
| | 2 | | | 1 | | | 7 | 8 |
| | | | | | | | | |
| 6 | 7 | | | 9 | | | 2 | |
| | | | | 6 | | 5 | 9 | 2 |
| | | | | | 3 | | | |
| 2 | | 8 | 5 | | | | 6 | 1 |

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5519 का हल

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | 3 | 2 | 9 | 5 | 6 | 1 | 7 | 8 |
| 6 | 8 | 5 | 7 | 1 | 4 | 9 | 2 | 3 |
| 9 | 1 | 7 | 3 | 8 | 2 | 4 | 5 | 6 |
| 3 | 4 | 8 | 6 | 2 | 7 | 5 | 1 | 9 |
| 5 | 6 | 1 | 8 | 4 | 9 | 2 | 3 | 7 |
| 2 | 7 | 9 | 5 | 3 | 1 | 6 | 8 | 4 |
| 1 | 9 | 3 | 4 | 7 | 5 | 8 | 6 | 2 |
| 8 | 2 | 4 | 1 | 6 | 3 | 7 | 9 | 5 |
| 7 | 5 | 6 | 2 | 9 | 8 | 3 | 4 | 1 |

Jagrutidaur.com, Bangalore

## अपना ब्लॉग

### 94 प्रतिशत चीनी रह रहे हैं

**मोहन।** भौगोलिक जनसांख्यिकी विशेषज्ञ हू ह्वानयुंग ने इसी वर्ष चीन के नक्शे पर पूर्वी रूस के करीबी शहर हेइहे और बर्मा के नजदीकी शहर तंगछुंग को जोड़ती एक तिरछी रेखा खींचकर बताया था कि इस रेखा के पूरब में देश के 36 प्रतिशत क्षेत्रफल में 96 प्रतिशत चीनी आबादी रहती है, जबकि इसके पश्चिम में कुल 64 प्रतिशत रकबे में मात्र 4 फीसद चीनियों का वास है। तब से अब तक गुजरे 85 वर्षों में मंगोलिया के अलग देश बन जाने से पश्चिमी इलाके का रकबा 57 प्रतिशत रह गया है और आबादी तमाम कोशिशों के बावजूद 6 प्रतिशत हो पाई है, जबकि हू लाइन से पूरब के 43 फीसद इलाके में 94 प्रतिशत चीनी रह रहे हैं। इस सोच के तहत पश्चिम में कई रेलवे लाइनें बिछाई गई हैं, जिनमें एक पर बुलेट ट्रेन भी चलती है।